Q → लॉक के प्राथमिक तथा गौण गुणों में भेद को स्पष्ट करें ?

Ans → गुण द्रव्य की वह शक्ति है, जिसके कारण आत्मा में प्रत्यय उत्पन्न होते हैं। लॉक के अनुसार मूलगुण द्रव्य की वह शक्ति है जो द्रव्य में वास्तव में पाया जाता है। इसे भौतिक द्रव्य का अनिवार्य लक्षण कहा जा सकता है। जब हमारी ज्ञानेन्द्रियों का सन्निकर्ष द्रव्य वस्तुओं के मूलगुणों से होता है तो ये मूलगुण आत्मा में अपनी संवेदना उत्पन्न करते हैं। इस प्रकार संवेदनाओं के माध्यम से हमारी आत्मा में मूलगुणों का एक प्रतिबिम्ब अंकित हो जाता है। इस प्रतिबिंब को ही प्रत्यय कहते हैं। विस्तार आकार आकृति, गति, विराम, संख्या आदि प्राथमिक गुण हैं। ये प्राथमिक गुण वस्तुओं के साथ पाए जाते हैं। अतः लॉक प्राथमिक गुणों (मूल गुणों) को वस्तुनिष्ठ कहते हैं। प्राथमिक गुण हमारी आत्मा की कल्पना नहीं है। उससे स्पष्ट है कि प्राथमिक गुण वस्तुओं में पाए जाते हैं। ये प्राथमिक गुण हमारी आत्मा में प्रत्यय (विचार) उत्पन्न करते हैं। लॉक के अनुसार प्राथमिक गुणों को मापा

जा सकता है। इनके गणितीय होने के कारण इनका स्पष्ट ज्ञान हो सकता है।

प्राथमिक गुण ही आत्मा में द्वितीयक गुणों के प्रत्यय उत्पन्न करते हैं। द्वितीयक गुणों का ज्ञान परोक्ष रूप से होता है। रंग स्वाद, गन्ध, शीतलता, उष्णता आदि को द्वितीयक गुण कहा जा सकता है। लॉक के अनुसार द्वितीयक गुण वस्तुओं में नही पाए जाते है। ये आत्मनिष्ठ है। द्वितीयक गुणों को उत्पन्न करने की शक्ति वस्तुओं के प्राथमिक गुणों में ही होती है। लॉक द्वितीयक गुणों का आश्रय वस्तुओं को नही मानता, परन्तु द्वितीयक गुणों के संवेदन वस्तुओं के वास्तविक गुणों के द्वारा ही उत्पन्न किए जा सकते हैं।

हम अपनी आत्मा में स्वेच्छानुसार सफेदी, लालिमा, मीठापन, सुगन्ध, सुरीली ध्वनि इत्यादि द्वितीयक गुणों को उत्पन्न नही कर सकते। लॉक के अनुसार यदि ये गुण वस्तुनिष्ठ होते, तो सभी लोगों को समान रूप से अनुभूत होते। द्वितीयक गुण वस्तुओं के गुणात्मक पक्षों से सम्बन्धित होते हैं।

लॉक द्वितीयक गुणों को संवेद्य और प्राथमिक गुणों को असंवेद्य कहता है। द्वितीयक गुणों के प्रत्यय प्रत्यक्ष के कारणात्मक सिद्धांत की ओर संकेत करते हैं। इसी प्रकार प्राथमिक गुणों के प्रत्यय, जो वस्तुओं में पाए जाते हैं, वास्तविक गुणों के प्रतिबिम्ब हैं।

अतः स्पष्ट है कि लॉक जहाँ प्राथमिक गुणों के अधिष्ठान के रूप में भौतिक द्रव्य की सत्ता को सिद्ध करते हैं, वहीं द्वितीयक गुणों के प्राप्तकर्ता तथा संयोजनकर्ता के रूप में आत्मा की सत्ता को स्वीकार करते हैं।